भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका
वर्ष 32 अंक (1) जून 2024 पृ. 32-36
DOI: 10.56042/bvaap.v32i1.12184

वसुधैव कुटुंबकमूः पर्यावरणीय संधारणीयता की भारतीय अंतर्दृष्टि

शरद कुमार यादव
राजनीति विज्ञान विभाग, शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
ई-मेलः sarad.yadav@sbse.du.ac.in

सारांश

मानवीय गतिविधियों का दुनिया भर के पारिस्थितिकी तंत्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, वनों की अंधाधुंध कटाई और औद्योगिक प्रदूषण जैसी गतिविधियों ने न केवल पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ा है, बल्कि कृषि उत्पादन और जैव विविधता को भी काफी नुकसान पहुंचाया है। यह स्थिति उन समुदायों के जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है जो अपनी आजीविका के लिए जल, जंगल और ज़मीन पर निर्भर हैं। दरअसल, इस स्थिति को नवउदारवादी आर्थिक ढांचे के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में देखा जा सकता है, जो प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन और अत्यधिक उपभोग को बढ़ावा देता है। नव-उदारवादी अर्थतंत्र, जो अस्सी के दशक में एक प्रमुख आर्थिक सिद्धांत के रूप में उभरा, जिसका ज़ोर बाजार की स्वतंत्रता, निजीकरण, और विनियमन के उन्मूलन पर रहा। इस प्रणाली में, आर्थिक वृद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक और अनियंत्रित दोहन किया जाता रहा है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। इस संदर्भ में, भारत के 'वसुधैव कुटुंबकम' का दर्शन, जो सभी जीवों को एक परिवार के रूप में मानता है, एक प्रासंगिक विकल्प प्रस्तुत करता है। यह दर्शन हमें पर्यावरण के प्रति अधिक जिम्मेदाराना रवैया अख़्तियार करने और संधारणीय विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

मुख्य शब्दः भारतीय दर्शन, वसुधैवकुटुंबकम्, पर्यावरणीय नैतिकता, संधारणीयता, वैकल्पिक प्रतिमान

Vasudhaiva Kutumbakam: An Indian Insights of Environmental Sustainability

Sarad Kumar Yadav
Department of Political Science, Shaheed Bhagat Singh Evening College
University of Delhi, New Delhi
E-mail : sarad.yadav@sbse.du.ac.in

Abstract

Human activities are having a negative impact on ecosystems around the world. Activities such as overexploitation of natural resources, indiscriminate deforestation and industrial pollution have not only disturbed the ecological balance but also caused great loss of agricultural production and biodiversity. This situation most affects the lives of communities who depend on water, forests and land for their livelihood. In fact, this situation can be seen as a direct result of the neoliberal economic framework, which promotes uncontrolled exploitation and excessive consumption of natural resources. Neoliberal economics, which emerged as a dominant economic theory in the eighties, emphasized market freedom, privatization, and abolition of regulation. In this system, excessive and uncontrolled exploitation of natural resources has been carried out for economic growth, which is a matter of serious concern. In this context, India's philosophy of 'Vasudhaiva Kutumbakam'which considers all living beings as one family, presents a relevant alternative. This philosophy inspires us to adopt a more responsible attitude towards the environment and move on the path of sustainable development.

Keywords: Indian Philosophy, Vasudhaiva Kutumbakam, Environmental ethics, Sustainability, Alternative paradigm.

प्रस्तावना

वसुधैव कुटुंबकम् भारतीय दर्शन का एक सूत्रवाक्य है जो इस विश्वास पर आधारित है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार की तरह है, जिसमें सभी जीव और पारिस्थितिक तंत्र आपस में जुड़े हुए हैं। यह प्रसिद्ध श्लोक महोपनिषद के अध्याय चार के श्लोक 71 से लिया गया हैः 'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु

वसुधैव कुटुंबकम्'[1]। इस श्लोक का आशय यह है कि यह मेरा है, वह पराया है, ऐसे छोटे विचार के व्यक्ति करते हैं! उच्च चरित्र वाले व्यक्ति समस्त संसार को ही परिवार मानते हैं। यह विचार स्मरण कराता है कि मानव और प्रकृति के बीच कोई अलगाव नहीं है। प्रत्येक तत्व का अस्तित्व दूसरे तत्वों पर निर्भर करता है, जो दर्शाता है कि हम सभी एक बड़े वैश्विक समुदाय के सदस्य हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा न केवल मानव के बीच एकता और सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाती है, बल्कि प्रकृति के संतुलन और पर्यावरण सद्भव को भी बढ़ावा देती है। ''वसुधैव कुटुंबकम" के विचार को आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। यह अवधारणा हमें दुनिया को एक एकीकृत इकाई के रूप में देखने की शिक्षा देती है। इस दर्शन को अपनाकर हम न केवल पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को मजबूत कर सकते हैं, बल्कि एकजुट होकर आगे आने वाली चुनौतियों का सामना भी कर सकते हैं। यह हमें अपनी सीमाओं और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठने और एक ऐसा समाज बनाने की दिशा में मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करता है जो सभी के लाभ के लिए समावेशिता और न्याय को प्राथमिकता देता है।

संधारणीयता का समग्र दृष्टिकोणः वसुधैव कुटुंबकम्

संधारणीयता का विचार भविष्य की पीढ़ियों की अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता को जोखिम में डाले बिना वर्तमान ज़रूरतों को पूरा करना है। यह पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक कारकों को ध्यान में रखता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संसाधनों का उपयोग इस तरह से हो कि उन्हें भविष्य के लिए संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सके[2]। हालाँकि, आर्थिक उन्नति पर केंद्रित विकास की प्रचलित वर्तमान अवधारणा ने संधारणीयता की व्यवहार्यता के लिए महत्वपूर्ण बाधाएं उत्पन्न की हैं। विकास का यह दृष्टिकोण प्राकृतिक दुनिया के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करता है तथा सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को बढ़ाता है। एक स्थायी और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने के लिए, यह जरूरी है कि विकास की प्रचलित समझ को फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए और मानव तथा पृथ्वी दोनों के दीर्घकालिक स्वास्थ्य और समृद्धि को प्राथमिकता दिया जाए। ऐसे में संधारणीय विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। इसका मतलब केवल पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक आयामों को भी साथ लेकर चलना भी है। इस समग्र दृष्टिकोण का उद्देश्य मानव गतिविधियों और पारिस्थितिकी तंत्र के बीच सामंजस्य स्थापित करना है, जिससे संपोषणीय विकास सुनिश्चित हो सके। ''वसुधैव कुटुंबकम'' का भारतीय दर्शन हमें सिखाता है कि पृथ्वी के सभी जीव और तत्व एक परिवार के सदस्य हैं, और उनका सम्मान और संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है। यह सिद्धांत संधारणीयता के समग्र दृष्टिकोण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह सहयोग, पारस्परिक सम्मान, और एकीकृत समाधान की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इस प्राचीन ज्ञान को समझकर और अपनाकर, हम पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के लिए एक संतुलित और टिकाऊ भविष्य की दिशा में काम कर सकते हैं।

1. पारिस्थितिकीय संकट से निपटने हेतु एकीकृत दृष्टिकोण

विश्वभर में ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, और जैव विविधता के क्षरण ने पर्यावरणीय स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। ओलिवर वायमन के सहयोग से विश्व आलथक मंच द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन से 2050 तक वैश्विक स्तर पर 12.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का आर्थिक नुकसान और अतिरिक्त 14.5 मिलियन मौतें होने का अनुमान है[3]। यह खतरनाक पूर्वानुमान इन ज्वलंत मुद्दों को संबोधित करने और उनके विनाशकारी परिणामों से निपटने के लिए प्रभावी समाधान खोजने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है। यह ज़रूरी है कि हम न केवल स्थानीय स्तर पर इन चुनौतियों का समाधान निकाले, बल्कि उनके विनाशकारी परिणामों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए वैश्विक दृष्टिकोण से उनसे निपटने के महत्व को भी पहचानें। ऐसे में वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा इस विचार पर जोर देती है कि हमें सभी राष्ट्रों को मिलकर काम करना होगा ताकि प्राकृतिक संकटों का समाधान समन्वित और संगठित ढंग से किया जा सके। इस दृष्टिकोण से, पर्यावरणीय संरक्षण की योजनाओं और नीतियों को वैश्विक स्तर पर विकसित करने की आवश्यकता स्पष्ट होती है। एक एकल देश या क्षेत्र के बजाय, हमें संयुक्त रूप से वैश्विक पहलकदमियों, समझौतों, और कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो प्रकृति के संरक्षण में अभूतपूर्व सहयोग और समन्वय प्रदान करें। इस दिशा में, विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को साझा मंच बनाने की आवश्यकता है ताकि वे साझेदारी में काम कर सकें और समस्याओं के समाधान के लिए समर्थन प्राप्त कर सकें। वैश्विक स्तर पर चल रहे प्रयासों के बावजूद, इन सहयोगी प्रयासों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सभी देशों के बीच सहमति और समर्पण का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है। इसलिए, वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा सभी क्षेत्रों में समन्वित नीतियों और पहलों की आवश्यकता पर जोर देती है। यह संरक्षण रणनीतियों और नीतियों के निर्माण को प्रोत्साहित करता है जो सभी संबंधित पक्षों को लाभान्वित करते हुए समग्र रूप से पर्यावरण की रक्षा करता हो। इससे एक समृद्ध एवं संधारणीय पर्यावरण की दिशा में कदम बढ़ा सकेंगे, जो हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और बेहतर भविष्य की प्रत्याभूति होगी।

2. संधारणीयता में मानवीय मूल्यों का समावेशन पर केंद्रित

आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण ने न केवल तकनीकी उन्नति और जीवन-स्तर में सुधार किया है, बल्कि मानव जीवन को सहज और सुविधाजनक भी बनाया है। हालांकि, इसके साथ ही उपभोक्तावाद और लालसा की प्रवृत्ति भी तेजी से बढ़ी है। अधिक उत्पादन और उपभोग की बढ़ती लालसा की वजह से प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। इससे वन, खनिज, जल और वायु जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा है, जिससे पर्यावरण असंतुलन पैदा हुआ है[4]। दूसरी तरफ़, लालसावादी प्रवृत्ति के कारण लोगों में आर्थिक असमानता बढ़ रही है। जिनके पास संसाधन हैं, वे और अधिक पाने की चाह में रहते हैं, जबकि पिछड़े वर्ग के लोग इस दौड़ में पिछड़ते जाते हैं। नतीजतन, समाज के भीतर आर्थिक असमानता का अंतर बढ़ता जा रहा है और व्यक्ति सामाजिक संबंधों को नज़रअंदाज़ करने लगे हैं। वे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और भौतिक ज़रूरतों को प्राथमिकता देते हैं, जो बदले में सामुदायिक संबंधों और सामाजिक सामंजस्य को कमज़ोर करता है[5]। मनुष्यों में बढ़ते लालच और उपभोक्तावाद ने नैतिक मूल्यों में गिरावट में योगदान दिया है। अधिक पाने की चाह में, व्यक्तियों ने नैतिकता और ईमानदारी जैसे सिद्धांतों को अनदेखा करना शुरू कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में बेईमानी और अनैतिकता बढ़ गई है[6]।

ध्यान रहे, वर्तमान उपभोग-उन्मुख समाज में, विकास की प्रक्रिया में जिस संतुलन और नैतिकता की आवश्यकता है, वह अक्सर उपेक्षित हो जाती है। इसके निराकरण के लिए सततता, सामूहिक भलाई, और नैतिक मूल्यों पर जोर देने की आवश्यकता है। वसुधैव कुटुंबकम् का सिद्धांत मानव और प्रकृति के बीच सह-अस्तित्व पर जोर देता है, जो आधुनिक संधारणीयता में नैतिक मूल्यों और जिम्मेदारियों को शामिल करने का मार्गदर्शन करता है। यह हमें एक नैतिक अनिवार्यता प्रदान करता है कि हम न केवल अपने लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों और संपूर्ण जीवमंडल के लिए भी धरती का संरक्षण करें। यह दृष्टिकोण हमें जिम्मेदार उपभोग और संरक्षण के प्रति जागरूक बनाता है[7]।

3. प्राकृतिक विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन का सम्मान

आईपीबीईएस की रिपोर्ट के मुताबिक़, पृथ्वी की 75% भूमि की सतह में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, इसके 66% समुद्री क्षेत्र प्रभावित हुए हैं, 85% आर्द्रभूमि नष्ट हो गई हैं, 68% जंगली कशेरुक आबादी गायब हो गई है, 25% प्रजातियाँ विलुप्त होने का सामना कर रही हैं, और पृथ्वी की जीवन शक्ति पहले की तुलना में 50% कम हो गई है। इन चिंताजनक आंकड़ों के आलोक में, यह स्पष्ट है कि वर्तमान में हम जिन गंभीर पारिस्थितिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उनसे निपटने के लिए तत्काल और निर्णायक कदम उठाए जाने चाहिए। ऐसे में वसुधैव कुटुंबकम् का विचार हमें सिखाता है कि सभी जीवधारी आपस में जुड़े हुए हैं और परस्पर निर्भर हैं। इसका आधार यह है कि जीवन की समृद्धि और पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन प्रकृति की विविधता में निहित है। प्रकृति के हर तत्व का सम्मान करना और उनकी रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है, चाहे वह जीव-जंतु हो या वनस्पति। प्रत्येक जीव अपने ढंग से पर्यावरण को संतुलित करने में योगदान देता है। पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न तत्व जैसे हवा, पानी, मिट्टी, और जीवधारी, एक जटिल और समन्वित नेटवर्क में बंधे होते हैं, और यदि किसी एक तत्व में असंतुलन उत्पन्न होता है, तो इसका प्रभाव पूरे तंत्र पर पड़ता है। पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण केवल कुछ व्यक्तियों या समूहों की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, बल्कि यह एक सामूहिक प्रयास है। यह दृष्टिकोण हमें प्रेरित करता है कि हम प्रकृति की हर रचना का सम्मान करें और सामूहिक प्रयासों द्वारा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखें। जैव विविधता का संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र के बीच सामंजस्य स्थापित करना दीर्घकालिक दृष्टिकोण से जरूरी है, ताकि भविष्य के लिए एक स्थिर और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित किया जा सके[8]।

4. वैश्विक सहयोग और ज्ञान-साझाकरण की आवश्यकता पर केंद्रित

वर्तमान दौर में पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग और सूचनाओं का आदान-प्रदान बहुत ज़रूरी है। दुनिया के समक्ष आने वाली चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सभी राष्ट्रों को एक साथ मिलकर काम करना और अपने ज्ञान को साझा करना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, कई अंतरराष्ट्रीय संधियाँ और समझौते हैं जिनका उद्देश्य दुनिया भर के देशों को विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए एक साथ लाना है। ये समझौते विभिन्न देशों को स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और सतत विकास के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा जैसी बाधाओं के बावजूद साझा लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है, भारत ने सदियों से वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत को कायम रखा है। वसुधैव कुटुंबकम् का विचार पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को प्रोत्साहित करता है। ज्ञान-साझाकरण के माध्यम से, एक देश के सफल प्रयासों और नवाचारों को दूसरे देशों में लागू किया जा सकता है, जिससे वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय प्रबंधन में सुधार हो सकता है। यह दृष्टिकोण हमें प्रेरित करता है कि हम समन्वित और साझा ज्ञान पर आधारित प्रयासों से पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करें। भारत, वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांत पर आधारित वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जी 20 जैसे मंचों पर भारत ने हरित विकास,

नवीकरणीय ऊर्जा, और जलवायु वित्तपोषण के मुद्दों पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत की प्रतिबद्धता, सोलर अलायंस जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से, वैश्विक सौर ऊर्जा उपयोग को बढ़ावा देने और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में एकजुटता का उदाहरण पेश करती है। इसके अलावा, भारत का सक्रिय योगदान जलवायु वित्तीयन में भी देखा गया है, जो विकासशील देशों को अपने पर्यावरणीय लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करता है[9]।

5. पारिस्थितिकीय संधारणीयता में पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक भागीदारी का महत्व

आधुनिकता ने हमारे समाज में कई परिवर्तन लाए हैं, जिसमें पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक संस्कृति की भूमिका में भी बदलाव आया है। स्थानीय समुदायों की नींव रहे पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाज तकनीकी नवोन्मेष, शिक्षा में बदलाव और बढ़ते व्यावसायीकरण जैसे कारकों के कारण नष्ट हो रहे हैं। यह गिरावट इन समुदायों के बीच समझ और संबंधों को नष्ट कर रही है जो पर्यावरण की सुरक्षा और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सदियों से इन्होंने अपने पारंपरिक ज्ञान और समुदाय की मजबूत भावना के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार रहे हैं। उनकी पारंपरिक विधियाँ और प्रथाएँ, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं, कई शताब्दियों से पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में कारगर साबित हुई हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों से उत्पन्न वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा पर्यावरण नीतियों के विकास में स्थानीय समुदायों को शामिल करने और उनके पारंपरिक ज्ञान को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित करती है। चूँकि, स्थानीय समुदायों के पास पीढ़ियों से संचित पारंपरिक ज्ञान होता है, जो स्थानीय पारिस्थितिकी, जल प्रबंधन, और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर आधारित होता है। यह ज्ञान विशेष रूप से जलवायु अनुकूलन और पर्यावरणीय पुनर्वास में मूल्यवान हो सकता है। उदाहरण के लिए, भारत के विभिन्न स्थानीय/जनजातीय समुदायों के पास जल संचयन और कृषि के अनुकूल स्थानीय तरीकों का विस्तृत ज्ञान है। दरअसल, स्थानीय समस्याओं के समाधान में परंपरागत ज्ञान का महत्व बढ़ जाता है, क्योंकि यह स्थानीय जलवायु और पारिस्थितिकीय परिस्थितियों के अनुरूप होता है। जैसे कि रेगिस्तानी क्षेत्रों में जल संरक्षण के लिए पारंपरिक तंत्रों का उपयोग, जो इन क्षेत्रों में जल संकट को प्रभावी ढंग से संबोधित करता है[10]।

वहीं पर्यावरणीय संरक्षण में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। यह उनके पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करता है और उनकी सक्रिय भागीदारी से पर्यावरणीय योजनाओं और नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन होता है। उदाहरण के लिए, वन संरक्षण परियोजनाओं में स्थानीय समुदायों की भागीदारी उन्हें आर्थिक लाभ भी प्रदान करती है, जिससे उनकी जीविका और संरक्षण प्रयास दोनों मजबूत होते हैं। स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने का अर्थ है उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना, जिससे वे अपनी जरूरतों और पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक समाधान के साथ जोड़ सकें। उदाहरण के लिए, मछली पकड़ने वाले समुदायों को स्थायी मछली पकड़ने की प्रथाओं के बारे में शिक्षित करना, ताकि वे अपने पारंपरिक तरीकों को आधुनिक संरक्षण तकनीकों के साथ एकीकृत कर सकें।

पर्यावरणीय नीतियों में स्थानीय और वैश्विक प्रयासों का समन्वय, जैसे कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए स्थानीय समाधानों को वैश्विक रणनीतियों के साथ जोड़ना, समग्र प्रभाव को मजबूत करता है। उदाहरण के लिए, ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ वैश्विक रणनीतियों को स्थानीय सामुदायिक अनुकूलन योजनाओं के साथ संरेखित करना, जिससे व्यापक और समन्वित जलवायु कार्रवाई सुनिश्चित होती है। स्थानीय पारंपरिक ज्ञान को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत करना और अन्य समुदायों के साथ साझा करना, पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए नए दृष्टिकोण प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, एशियाई देशों के पारंपरिक कृषि पद्धतियों का ज्ञान अन्य वैश्विक कृषि पद्धतियों के लिए भी लाभकारी हो सकता है।

निष्कर्ष

"वसुधैव कुटुम्बकम" का सिद्धांत भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण आधारशिला है जो हमें यह बताता है कि संपूर्ण पृथ्वी एक ही परिवार है। इस अवधारणा के माध्यम से यह बोध होता है कि हमें पृथ्वी के समग्र समुदाय की सुरक्षा, समृद्धि और परस्पर-संबंधों को बनाए रखने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत न केवल हमें विश्व बंधुत्व सिखाता है बल्कि यह भी बताता है कि हमें अपनी आवश्यकताओं और प्रकृति के उपहारों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए। इस दृष्टिकोण से, हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित होते हैं। हमें अपने व्यवहार में योग्यता और समझदारी लानी चाहिए ताकि हम सामुदायिक और पृथ्वी स्तर पर समग्र विकास का समर्थन कर सकें। इस प्रकार, वसुधैव कुटुम्बकम् एक ऐसा आदर्श है जो हमें एक स्वस्थ और संतुलित जीवन की ओर ले जाता है।

संदर्भ

1. कर, ए. के. (2023). वसुधैव कुटुंबकम् (द वर्ल्ड इज अ फैमिली): इनसाइट फ्रॉम महोपनिषद। नेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी एंड संस्कृत रिसर्च, 1(49), 42-45।
2. वर्ल्ड कमीशन ऑन एन्वॉयरॉन्मेंट एंड डेवलपमेंट (डब्लूसीइडी). (1987)। आवर कॉमन यूचर ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवलसटी प्रेस।

3. वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, & ओलिवर वाईमान (2024, जनवरी)। क्वान्टिफाइंग द इम्पैक्ट ऑफ़ क्लाइमेट चेंज ऑन हेल्थ। https://www3.weforum.org/docs/WEF_ Quantifying_ the_Impact_ of_ Climate_Change_ on_ Human_ Health_2024.pdf

4. सुब्रमण्यन, के. आर. (2018)। द क्राइसिस ऑफ़ कंजप्शन ऑफ़ नेचुरल रिसोर्सेज *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रीसेंट इन्नोवेशंस इन अकादमिक रिसर्च*, 2(4), 8-19।

5. कोबर्न, डी. (2000)। इनकम इनिक्वलिटी, सोशल कोहेसन एंड द हेल्थ स्टेटस ऑफ़ पॉपुलेशन्सः द रोल ऑफ़ नियो-लिबरलिजम। *सोशल साइंस* एवं *मेडिसिन*, 51(1), 135-146।

6. परिहार, आर., परिहार, पी., एवं शर्मा, डी. जे. (2018)। डिक्लाइन ऑफ़ एथिक्स एंड मोरल वैल्यूज इन प्रेजेंट सिनेरियोः ऐन एनालिसिस। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ करंट माइक्रोबायोलॉजी एंड एप्लाइड साइंसेज*, 7(9), 1085-1092।

7. रविकांत, जी. (2021)। इंडियन फिलॉसफी एंड एन्वॉयरॉन्मेंटल एथिक्स। जीएनओएसआईः एन इंटरडिस्प्लिनरी जर्नल ऑफ़ ह्यूमन थ्योरी एंड प्रैक्टिस, 4(1 (मई)), 47-63।

8. आईपीबीइएस (2019)। ग्लोबल असेसमेंट रिपोर्ट ऑफ़ द इंटरगवर्नमेंटल साइंस-पालिसी प्लेटफार्म ऑन बायोडायवर्सिटी एंड इकोसिस्टम सर्विसेज।

9. भौमिक, एस. (2023)। जी20/ 2023ः इंडियाज कमिटमेंट टू सस्टेनेबल डेवलपमेंट। आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन। https://www.orfonline.org/expert-speak/g20-2023-india-s-commitment-to-sustainable-development.

10. मिश्रा, अनुपम (1993)। *आज भी खरे हैं तालाब*। प्रभात प्रकाशन।

11. पोखरियाल, बी.के., ब्रानने, पी., नर्स, एम., एवं मल्ला, वाई.बी. (2007)। कम्युनिटी फॉरेस्ट्रीः कंजर्विंग फॉरेस्ट्स, सस्टेर्निंग लाइवलीहुडस एंड स्ट्रेंथर्निंग डेमोक्रेसी। जर्नल ऑफ़ फारेस्ट एंड लाइवलीहुड, 6(2), 8-19।